“ माँ न वाकेड़्या भेम ने थाएँ ”

वातें
वाग्धारा नी

दिसम्बर, 2022

VAAGDHARA

अंक 31

प्यारे किसान भाइयों बहनों, संगठन के सदस्यों,स्वराज मित्रो सहजकर्ता तथा प्यारे बच्चों जय गुरु !!!

आशा है आप सभी कृषि कार्य में तथा अपनी जीवनचर्या में खुशी से सलंगन होंगे दिसंबर का माह हमारे लिए वाते पत्रिका के माध्यम से आप से पुनः रूबरू होने का मौका मिला मृदा दिवस हमारा दिसंबर माह में आता है जिसे हम बहुत आनंद से हमारी स्मृति और हमारी मिट्टी से हमारी पहचान को पुनर्भाषित करने के लिए एकत्रित होते हैं हम हमारी पीढ़ियों को बताते हैं कि हम किस प्रकार मिट्टी से जुड़े हुए और हमारी मिट्टी हमारे भगवान का स्वरूप है यही एक ऐसा धन है जिसे आने वाली पीढ़ियों को हम दे के जाते है आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर मिट्टी नहीं होगी तो हमारा अनाज नही होगा, हमारे वन नहीं होंगे, हमारी वनस्पति नहीं होगी और अगर वन, वनस्पति हमारा पर्यावरण नहीं रहा, प्रकृति नहीं रही तो यह संसार कैसे रहेगा तो इस संसार को बचाने में, इस जीवन को बचाने में इस मिट्टी को बचाने वाले हम लोग ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इस बात को आप आने वाली पीढ़ियों को बताते है, यही हमारा सौभाग्य है | हमारे इस जुड़ाव को ही परिभाषित करते रहने का प्रयास आप सब के सहयोग से वाग्धारा करता है | साथियों मैं ज्यादा इस माह कुछ नहीं कहूंगा बस एक आग्रह करना चाहूंगा एक ही उदहारण से जिस प्रकार से बथुवा की भाजी को एक तरफ दवाई बेचने वाले मारने की दवाई से उसको खत्म करते हैं और हम लोग हमारा पोषण समझ करके उसकी सब्जी बना के खाते है वह हमारे शरीर के लिए उपयोगी है तो भी ये मारने वाले उसको मारने के लिए दवाई देते है जिस प्रकार से आदिवासी जीवन शैली, कृषि जीवन शैली, हमारे स्वराज की जीवन शैली महत्वपूर्ण है उसे बाजार मारना चाहता है आप जिस प्रकार से बथुवा को बचा कर रखते हैं उसी प्रकार से हमें स्वराज को, हमारी आदिवासी जीवन शैली को, हमारी संस्कृति को बचा के रखना होगा तभी हम इस प्रकृति को बचा पाएंगे | आपके विश्वास निरंतर सोचने की प्रकृति और प्रक्रिया और प्रयास करने की प्रक्रिया पर विश्वास की वजह से ही हर माह मै आप तक लिख पाता हूँ हमें इसे बचा के रखना होगा आने वाली पीढ़ियों के लिए सहज कर रखना होगा इसी विश्वास के साथ जय स्वराज, जय गुरु !!!

धन्यवाद

जय गुरु

आपका अपना

जयेश जोशी

रबी की फसल में सिंचाई का महत्व

समस्त भारत वर्ष मे स्थित जनजातीय जिले अपनी विशेष भौगोलिक परिस्थितियो के चलते एक अलग ही पहचान रखते है । इन क्षेत्रो के निवासियों का जुड़ाव व रहन- सहन प्रकृति के समीप, वन, पहाड़ियो एवं नदियो के नजदीक होने से उनसे जुड़े घटक उनकी जीविकोपार्जन के साधन बनते है । कुछ ऐसी ही भोगौलिक परिस्थितियां एवं वनो, खेतो से जुड़ाव दक्षिणी राजस्थान के तीन प्रमुख जनजातीय जिले बांसवाड़ा, डुंगरपुर एवं प्रतापगढ़ का भी है । ये जिले अरावली पर्वतमाला के दक्षिणी-पूर्वी भाग मे स्थित होने के कारण अधिक बरसात वाले तथा पहाड़ियो, तलहटियों के चलते ऊबड़-खाबड़ भू- भाग का निर्माण करते है । अधिक बरसात के चलते नदी,नाले एवं वनो की अधिकता के साथ ही 70 प्रतिशत से अधिक जनजातीय आबादी होने से ये जिले सविंधान के ट्राइबल सब प्लान श्रेणी के अंतर्गत आते है । जनजातियों का खेतो से जुड़ाव इस बात से भी जाना जा सकता है कि इनके निवास स्थल अधिकतर अपने खेतो पर ही छोटा सा घर बनाकर होता है तथा इनसे जुड़े पशुधन जैसे गाय, बैल, बकरी, मुर्गी इत्यादि इनके प्रमुख साथी होकर खेतो एवं जीवन से जुड़े समस्त घटको मे सहजीवन का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते है ।

विगत वर्षो मे कृषि क्षेत्र के नवीन अनुसंधानों के चलते खेती को लाभदायक बनाने के प्रयास पूरे भारतवर्ष मे किये गये । जिसमे जनजातीय किसानो को भी देश के अन्य किसानो कि तरह ही मानते हुए अधिक पैदावार देने वाली संकर किस्मों एवं नगदी फसलों के प्रयोग इन क्षेत्रों मे भी किये गये । अधिक बरसात एवं भरपूर उर्वरा शक्ति वाले प्रकृति के निकटस्थ इन खेतो मे अधिक उत्पादन एवं लाभ को आँकते हुए इन्हे अधिक उत्पादक माना गया, किंतु उन खेतो के स्वामित्व वाले जनजातीय किसान जो की पूर्णरूप से खेतो, वनोपज एवं उनसे जुड़े हुए संसाधनो पर ही आश्रित थे वे अपने मूलस्वरूप से भटकते हुए देखे गये ।

इस तथ्य को समझने के लिए पहले हमे जनजातियों के मूल स्वरूप को समझना आवश्यक हो जाता है । इनके स्वामित्व मे प्रति किसान दो-तीन बीघा जमीन होने से ये लघु एवं सीमांत किसानो की श्रेणी मे आते है । पारंपरिक रूप से वर्षा पोषित मिश्रित खेती करते हुए क्षेत्र मे प्रचलित समस्त फसलों की खेती अपने उपलब्ध खेत पर लेते हुए अपने परिवार एवं पशुधनों की समस्त जरूरतों को पूरा करते है ।

दिसंबर माह की जानकारी –

बीजो का अंकुरण परीक्षण करे, बीजो को बिजाम्रत से उपचारित करे, यथा संभव सभी फसलो की कृषि पंचांग के अनुसार बुवाई करे |

बुवाई के पूर्व सुबह या शाम के समय एक बार जीवाम्रत खाद को 200 लीटर पानी में घोल कर प्रति एकड़ जमीन पर देवे, बुवाई करते समय कम्पोस्ट खाद फसल अनुसार 1-2 टन प्रति एकड़ देवे | नवम्बर माह में बोयी गयी फसलो में कम्पोस्ट खाद को दूसरी बार बोने के 30 से 35 दिन बाद छिडकाव देवे | फसलो में 1 से 2 बार जीवाम्रत एवं उन्नत जैविक टोनिक को जमीन पर एक बार देवे |

रसचुस्क कीटो एवं छोटी इल्लियो के नियंत्रण हेतु दशपर्णी काढ़ा या ताजी छाछ का उपयोग करे | फसलो में इल्लिया, थ्रिप्स और लाल मकड़ी के नियंत्रण हेतु प्याज , लहसुन , मिर्ची और अदरक कि चटनी का घोल या पुरानी छाछ का छिडकाव करे |

आवश्यकतानुसार डोरा या कोलपा या हाथ निंदाई से खरपतवार को नियंत्रण करे धनिया, जीरा, सरसों में मोयला से नियंत्रण हेतु एक एकड़ फसल में 10 से 12 पीले चिपचिपे बोर्ड लगाये और समय पर इन पर आयल या ग्रीस लगाते रहे |

दिसंबर माह में गेहूं की फसल में क्या करे

- दिसंबर में बुवाई कर रहे हैं तो शीघ्र पकने वाला बीज बोएं
- फरवरी से बढ़ने लगता है तापमान
- मृदा का परीक्षण जरूर कराएं किसान
- जैविक खाद का उपयोग करे
- सिंचाई के बाद ही कम्पोस्ट का करें छिड़काव
- गेहूँ में खरपतवार का नियंत्रण जरूरी है |

जलवायु एवं भूमि की आवश्यकता

गेहूँ की खेती के लिए समशीतोषण जलवायु की आवश्यकता होती है, इसकी खेती के लिए अनुकूल तापमान बुवाई के समय 20-25 डिग्री सेंटीग्रेट उपयुक्त माना जाता है, गेहूँ की खेती मुख्यत सिंचाई पर आधारित होती है गेहूँ की खेती के लिए दोमट भूमि सर्वोत्तम मानी जाती है, लेकिन इसकी खेती बलुई दोमट,भारी दोमट, मटियार तथा मार एवं कावर भूमि में की जा सकती है। साधनों की उपलब्धता के आधार पर हर तरह की भूमि में गेहूँ की खेती की जा सकती है।

सिंचाई की आवश्यकता

गेहूँ की फसल की सम्पूर्ण अवधि में लगभग 35-40 सें.मी. जल की आवश्यकता होती है। इसके छत्रक (क्राउन) जड़ें निकलने तथा बालियों के निकलने की अवस्था में सिंचाई अति आवश्यक होती है, अन्यथा उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। गेहूँ के लिए सामान्यतः 4-6 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है।

कब करें गेहूँ की सिंचाई

गेहूँ की फसल यदि 20 से 25 दिन की हो गई हो तो खेत में पहली सिंचाई का प्रबंध करें। यदि पानी दो सिंचाइयों के लिए उपलब्ध है तो पहली सिंचाई मुख्य जड़ के विकास के समय तथा दूसरी फूल आते समय करनी चाहिए। यदि पानी तीन सिंचाइयों के लिए उपलब्ध है तो पहली सिंचाई मुख्य जड़ के विकास के समय, दूसरी सिंचाई तने में गांठ बनते समय और तीसरी दाने में दूध बनते समय करनी चाहिए। गेहूँ की फसल में सिंचाई की मात्रा सर्दियों में होने वाली वर्षा पर निर्भर करती है ।

गेहूँ की खेती में सिंचाई प्रबंधन है जरुरी

गेहूँ की खेती में सिंचाई प्रबंधन है जरूरी अधिक उपज के लिए गेहूँ की फसल को चार से पाच सिंचाई की जरूरत होती है। पानी की उपलब्धता, मिट्टी के प्रकार और पौधों की आवश्यकता के हिसाब से सिंचाई करनी चाहिए। गेहूँ की फसल के जीवन चक्र में तीन अवस्थाएं जैसे चंदेरी जड़े निकलना (21 दिन), पहली गांठ बनना (65 दिन) और दाना बनना (85 दिन) ऐसी हैं, जिन पर सिंचाई करना अतिआवश्यक है। यदि सिचाई के लिए जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो तो पहली सिंचाई 21 दिन पर इसके बाद 20 दिन के अंतराल पर अन्य पांच सिंचाई करें।

उन्नत जैविक टानिक बनाने की विधि एवं उपयोग सामग्री :-

1 किलो सोयाबीन

500 ग्राम महुआ फूल

500 ग्राम गुड़

250 ग्राम सहजन के पत्ते

6 पके केले

1 किलो गेंदा फूल

10-12 लीटर पानी

बनाने कि विधिः-

1 किलो सोयाबीन के बीज और 500 ग्राम महुआ के फुल लें। इसे 24 घंटे के लिए पानी में रख दें। सोयाबीन बीज और महुवा के फूल अच्छे से फुल जाये। अब फुले हुए सोयाबीन बीज और महुवा फुल , सहजन के पत्ते, गेंदे के फुल, गुड़, केले का सभी का अच्छे से कूट कर पेस्ट बना लें । पेस्ट को प्लास्टिक के ड्रम में डालें, उसमें 10 लीटर पानी डालें और 10 दिनों के लिए रख दें। ड्रम पर ढक्कन इस तरह से लगाये की हवा बहार नही आये । 10 दिन बाद इसे सूती कपड़े से छान लें। अब हमारा उन्नत जैविक टोनिक तैयार है |

उपयोग :-

फसल की छोटी अवस्था में (बुवाई के 30 दिन बाद तक) 250 मिली सोयाबीन टानिक लें, इसे 15 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिडकाव करें। फसल की उम्र के 40 दिन बाद, 500 मिली सोयाबीन टानिक लें, इसे 15 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिडकाव करें।

इसे 5-8 लीटर प्रति एकड़ की दर से सिंचाई के साथ मिट्टी में लगाया जा सकता है।

लाभ :-

उन्नत जैविक सोयाबीन टानिक का छिडकाव फ़सलों के फलने और फूलने व वृद्धि और विकास में भी सुधार करता है।

जीवामृत बनाने की विधि एवं उपयोग

सामग्री

- गाय का गोबर- 10 किग्रा
- गौ मूत्र -5-10 लीटर
- गुड – 1 किग्रा
- चने का आटा (बेसन)- 1 किग्रा
- जंगल/ पेड़ के नीचे कि मिट्टी – 50 ग्राम
- जल 200 लीटर

बनाने की विधि एवं उपयोग

बताई गई सामग्री को प्लास्टिक ड्रम में 200 लीटर पानी के साथ अच्छी तरह से मिलाएं I ड्रम के ढक्कन को बंद कर के छाया में रखें I घोल को दिन में 1 बार डंडे से अच्छे से बाये और दाये से हिलायेI 4 दिन के भीतर जीवामृत उपयोग हेतु तैयार है I इसे बुवाई के बाद सिंचाई के साथ जीवामृत को अंगुली की धार जैसे देना होगा I 200 लीटर/ प्रति एकड के लिए उपयोगी है I

घड़े के माध्यम से ड्रिप सिंचाई - किचन गार्डन को पानी देने का एक पारंपरिक तरीका है।

बच्चों के सीखने से जुड़े विविध आयाम

बच्चों के सीखने का बड़ा आधार विद्यालयों के शिक्षण पर ही निर्भर होता जा रहा है। और इसलिए भी शैक्षणिक संस्थानों की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गयी है।

संयुक्त परिवारों में रहकर बढ़ते हुए बच्चों के पास सीखने के सर्वाधिक अवसर होतें है।

पहली पाठशाला

बच्चे का सीखना उसके परिवार के साथ शुरू होता है, फिर समाज और विद्यालयों से।

सीखने में केवल सिद्धांतों और अवधारणाओं को समझने और जानने पर ही ध्यान केंद्रित नहीं होना चाहिए बल्कि हमारे पर्यावरण के बारे में जागरूकता का होना अत्यधिक आवश्यक है।

एकल परिवार संरचना के कारण, बच्चों को परिवार के बुजुर्गों और प्रत्येक उम्र के व्यक्तियों के सानिध्य के साथ पर्यावरण से परिचित होने में ज्यादा मदद नहीं मिल पा रही है ।

बच्चे के जीवन में मूल्य विकास पर ध्यान देना परम आवश्यक है ।

अनुसंधानों के अनुसार बाल्यावस्था और प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमों की योजना और बाल विकास के सिद्धांत

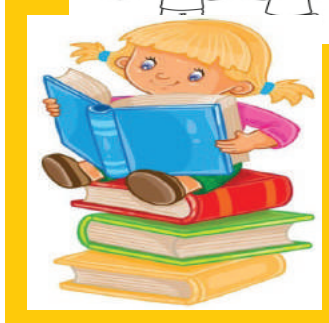

कोई भी कार्यक्रम बच्चे के साथ-साथ उसके **परिवेश** को ध्यान में रखकर बनाया जाए तो बच्चे का विकास अधिकाधिक होगा।

बच्चे के विकास की प्रक्रिया **क्रमिकता** के साथ लगातार चलती रहती है ।

पहले की चीजें बाद की चीजों को प्रभावित करती है । इसलिए **बचपन** के बारे में सोचते समय **प्रसव पूर्व** से लेकर शुरुआती स्तर के समय को ध्यान में रखना ज़रूरी है ।

स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा/मनोवैज्ञानिक विकास ये सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और बच्चों के विकास को पूरा करने के लिए एक वातावरण निर्माण का काम करते हैं ।

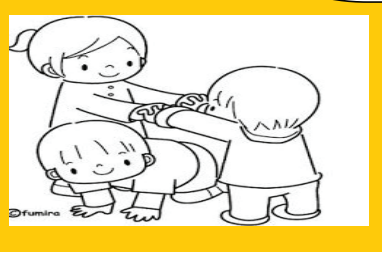

बालश्रम एवं भिक्षावृति के अभियान में मिली चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा को सफलता

1. चाइल्ड लाइन 1098 की टीम के द्वारा सतत जागरूकता अभियान में बालश्रम एवं भिक्षावृति से मुक्त

करवाकर बालक –बालिकाओ को पुन: शिक्षा एवं मुलभुत सुविधाओ से जोड़ने की पहल में मिली कामयाबी

2. शिक्षा से जोड़ने की पहल में

23 नाबालिग बालक – बालिकाओं को बालश्रम एवं भिक्षावृति से मुक्त करवाने में मिली कामयाबी टीम ने दस्तावेज तैयार करवाए |

3. टीम के द्वारा पता किया तो 6 बालक – बालिकाओं का आधार कार्ड नही होना बताया गया शेष अन्य राज्यों के प्रवासी

श्रमिको के बालक – बालिकाए थे टीम ने दस्तावेज तैयार करवाने में मदद की |

4. प्रवासी श्रमिको का दर्द उभरकर आया सामने जिसमे उनके द्वारा बताया गया की शिक्षा से तो आप जोड़ रहे हो परन्तु हमें खाद्यान सुरक्षा योजना से भी जुड़वाने में हमारी मदद कर दो |

5 . टीम को मिली कामयाबी बालक-बालिकाओ को विद्यालय से जोड़ा एवं खाद्यान के लिए प्रशासन की सहायता से कार्यवाही जारी है साथ ही 5 दिव्यांग (पात्र) की जानकारी लेकर ऑनलाइन आवेदन करवाए ताकि बालको को पालनहार का लाभ मिल सके

नोट :- जरुरत मंद बालको का एक ही सहारा चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा

शहद से अतिरिक्त आय प्राप्त करने के लिए अपने सरसों के खेत में मधुमक्खी का डिब्बा स्थापित करें।

जनजातिय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

माही

!! **राम – राम ,जय गुरु** !!

मेरे प्रिय साथियो पिछले माह हमने बात कि थी की किस प्रकार से आज का युवा कुछ बुरी संगतों में आकर असमय काल का ग्रास बन रहा है जिसमे सबसे ज्यादा दोपहिया वाहन तेज गति से चलाने के कारण अपना जीवन असमय में ख़त्म कर रहे है क्या ये सही है ? अपने परिवार की समस्त खुशिया एक पल में तबाह करना और उससे भी ज्यादा उस माँ,पिता ,पत्नी और सबसे प्रिय बच्चो के लिए जीवन में जीवन भर के लिए एक चुभन छोड़ जाना, साथियों मेरा अभिप्राय स्पष्ट है की सबसे पहले हमे जाग्रत होना होगा एवं दुसरे क्रम में खतरनाक घुमाव जहाँ पर आए दिन ऐसे हादसे होते रहते है क्योंकि मैने ऐसे स्थान इस माह देखे तो कही ना कही घुमाव के साथ ही रोड़ के आस- पास की वनस्पति जो काफी बड़ी हुई है जिसके कारण सामने से आने वाला वाहन स्पष्ट रूप से शाम व रात्रि के समय दिखाई नही देता है | मेरी मुलाकात समुदाय साथी से हुई उसने मुझे बताया की शाम के समय मै अपनी दो पहिया वाहन को लेकर निकला और देवदा से आगे एक चार पहिया वाहन ने डिपर नहीं दिया जिससे मेरी आँखों में इतनी तेज रौशनी हुई कि मुझे आगे कुछ दिखाई नही दिया और मेरा संतुलन नहीं रहा जिससे पास की झाड़ियों में जाके गिर गया | ऐसे कई कारण हो सकते है अतः मेरा इस संस्करण के माध्यम से ग्राम पंचायतो के सरपंचगण से निवेदन है कि मुख्य सड़को पर से अनावश्यक वनस्पति को साफ़ सफाई करवाए एवं आगे इस प्रकार की अनहोनी को ना होने देवे, साथ ही बड़े वाहन चालको से भी निवेदन है की चाहे वाहन छोटा हो या बड़ा आप डीपर का प्रयोग आवश्यक रूप से करे |

सच्ची खेती-गाँव की महिलाये अब जैविक शब्द को अच्छे से समझने लगी है ,हमारी पुरानी पीढ़िया देसी खेती करती थी और इससे कितने लाभ होते थे साथियो अब हमारी बहने सक्षम समूह की बैठकों के अलावा भी गाँव की अन्य महिलाओ को बीजोपचार,निमास्त्र,दसपर्णी और अन्य जैविक दवाई बनाने की विधि को समझकर अपनाना भी शुरू किया है इसका उदहारण जब मेरे द्वारा मियासा गाँव में भ्रमण के दौरान महिलाओ से संवाद हुआ तो उन्होंने बताया की शुरुआत में हमने सिर्फ यह छिडकाव सब्जियों पर किया जिसमे हमें परिणाम काफी अच्छे मिले इसके बाद हमारे खेतो में हमारे खाने के लिए बोया गया अनाज पर किया इसका परिणाम भी उम्मीद से ज्यादा रहा अब हम बहने गाँव की अन्य महिलाओ को अपनाने के लिए प्रेरित कर रही है जिसमे देसी बीज, देसी खाद और जैविक दवाई के साथ ही पशुधन को बढ़ाना मुख्य है ख़ुशी हुई की आज वाग्धारा की मेहनत रंग लाई साथियो इसका उदाहरण भी इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि यहाँ की स्थिती आँखों देखी है उम्मीद और विश्वास है कि यही स्थिती हमारे वाग्धारा के हर परिवार की हो ...

सब्जियाँ लगभग सभी परिवारों में उगाई जाने लगी है क्योंकि कुछ वर्ष पूर्व हम लोग सिर्फ मिर्ची,बैगन,टमाटर और 01 से 02 बेल वाली सब्जी तक सीमित है पर आज का परिद्रश्य इसके बिलकुल विपरीत है जहाँ 04 सब्जियाँ समुदाय ले रहा था वहा पर अब 07 से ज्यादा सब्जियाँ उगाकर स्वयं के घर के लिए काम में लेने लगा है जिससे उसकी बाजार निर्भरता सब्जी को लेकर तो ख़त्म हुई साथ ही मासिक 3000 तक की बचत भी हुई वाकई बहुत ही आनंद आता है जब परिवार अपने हिसाब से हर रोज बदल -बदल के मन माफिक हरी सब्जियाँ अपने घर पर अपने खाने में ले ...

सच्चा बचपन–ग्राम पंचायत स्तर पर गत माह हमारे बाल समूहों ने बाल सप्ताह के दौरान एक आवाज अपने स्कूल,शौचालय और बरामदे और खेल मैदान को लेकर उठाई और इसको ग्राम सभा में ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के साथ मिलकर जिस प्रकार से ग्राम सभा में प्रस्ताव रखा है वाकई बहुत ही सराहनीय प्रयास लगा और इसके साथ ही ग्राम पंचायत से भी अनुरोध है कि बच्चो के माध्यम से प्रयासों को बढ़ावा देवे ताकि हमारे गाँव के बच्चे कल के भविष्य में बड़े से बड़े प्रशासनिक अधिकारी से भी अपनी बात सजगता से रख सके ...

साथियों जो बच्चे अपनी पढाई को छोड़ चुके है उनके लिए भी अब कौशल प्रशिक्षण की होड़ लगी हुई है इसलिए इस संस्करण के माध्यम से निवेदन है कि अब 17+ बच्चो को प्रशिक्षण से जोड़ने के साथ ही अपने बच्चे की बाहरवी तक की शिक्षा सुनिश्चित करवाए ताकि बच्चा कौशल प्रशिक्षण लेकर एक कौशल श्रमिक के तोर पर उसकी पहचान हो और दूसरा अपने हुनर से वह अपना जीवन यापन अच्छे से कर सके क्योंकि अमुमन देखा गया है की जब भी परिवार पलायन करता है तो बच्चो को भी मजबूरन पलायन करना पड़ता है और इसके पश्चात आप जानते है कि बच्चा शिक्षा से काफी दूर चला जाता है साथियों हो सकता है इसे उदहारण कम देखने को ही मिले होंगे की माता –पिता पलायन कर पलायन वाले स्थान पर बच्चो की शिक्षा पूर्ण करवाते होंगे पर जब एक कुशल कारीगर या श्रमिक जाता है तो स्थिति कुछ और होती है इसलिए आगे से हम सब मिलकर एक अभियान जरुर चलाएंगे की बस अब नही कडिया मजदूरी .....

सच्चा स्वराज–साथियो हमारी बैठको में कई बार मुद्दे आते है कि आज के दौर में हमारे हाट बाजार क्यों बंद होते जा रहे है । हर तरह कें पारंपरिक व्यवसाय करने वाले सभी साथी पलायन कर बाजारों की तरफ रुख कर रहे हैं। जिससे उनका पारंपरिक तरीके से जो हमारे परिवारों में हुनर था वह अब विलुप्त होते जा रहा है जिसके लिए आज के युवाओं को बाजार पर निर्भर नही रह कर अपने गांव स्तर पर जो बाप-दादा द्वारा चलाई जा रही अपनी पुरानी परंपरा अनुसार जो हम व्यवसाय कर रहे थे उसकी तरफ लौटेंगे, निश्चिंत ही बाजार पर निर्भरता घटेगी और हमे हमारे स्तर पर एक बाजार मिलेगा जो की हमे भविष्य के लिए रोजगार और आने वाली पीढ़ी को हमारे द्वारा बनाई गई पारंपरिक व्यवस्था मिलेगी जो की किसी विरासत से कम नही होगी, अगर किसी कारण ऐसा नहीं होता है तो बड़े-बड़े बाजार ग्राम में रहने वाले लोगों के लिए घाटे का ही सौदा होंगे क्योंकि अगर हम बीज स्वराज की बात करते है और कल अगर बीज बनाने वाली कम्पनी अपने हाथ खड़े कर दे तो उस समय सिर्फ युवा ही नहीं हमारे क्षेत्र के किसान, कारीगर, महिला,बच्चे और अन्य की क्या हालत होगी निश्चिंत ही आप इस विषय को सोचे और अनुभव करे. इसका सबसे श्रेष्ठ उदाहराण कोरोना काल में देखने को मिला है इसलिए हम तो आज भी युवाओं से यही प्रार्थना करते हैं कि आप अपने पारंपरिक व्यवसाय की ओर लौटे और अपने परिवार के हुनरमंद बुजुर्गों से अपना व्यवसाय वापस शुरू करें और अपनी आजीविका अपने गांव स्तर पर गांव के पास जो पहले हाट बाजार लगते थे वहां से अपनी आजीविका को आप सुदृढ करे, अपनी रोजमर्रा की चीजों को नियमित रूप से तैयार करना शुरू करे नहीं तो बाजारीकरण से हमें बहुत ही नुकसान होगा हमारी जो पारंपरिक व्यवसाय करने की जो शिक्षा थी वह भी खत्म हो जाएगी हमारी आने वाली पीढ़ियां उन व्यक्तियों को भूल जाएगी और हम सिर्फ और सिर्फ बाजार पर ही निर्भर रहेंगे इसलिए हमें अपने आस-पास में रहने वालें हुनरमंदों से सीख कर वापस अपने व्यवसाय की ओर लौटना चाहिए और गांव स्तर पर वापस से हाट शुरू करना पड़ेगा तभी हमारा अस्तित्व और हमारी संस्कृति बची रहेगी और हमें अपने परिवार के साथ रहने का भी मौका मिलेगा नहीं तो परिवार गांव में रहेगा और युवा बाजार में रहेंगे जिससें पलायन बढ़ेगा बच्चों में शिक्षा की कमी रहेगी जो बहुत ही नुकसान दे सकती है हमारे परिवार को शिक्षित एवं मजबूत बनाना है तो हमें अपने व्यवसाय के साथ-साथ अपने परिवार को भी आत्मनिर्भर बनाना पड़ेगा जो हम गांव और अपने पारंपरिक व्यवसाय से ही शुरु कर सकते हैं.....

वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग जरुर करे आप है तो परिवार है.....

हिरन

जय गुरु साथियों!!

मुझे उम्मीद है सब कुशल-मंगल होगे, हम सब मिल कर हिरन इकाई की गतिविधियों को जानते है जोकि हमारे क्षेत्र में चल रही है |

सच्ची खेती

जैसा की आप सभी को ज्ञात होगा पूर्व में दिसम्बर माह में गेहूँ, चना के साथ-साथ मौसम के अनुसार पोषण वाडी में सब्जियाँ करते है लेकिन आप जानते होंगे की बिगड़ते मौसम,बादल इन सब कारण से फसलो व सब्जियों में इस मौसम में लगने वाले रोगों से हम कैसे फसलो का बचाव करे देसी उपचार से तो हमे सक्षम समूह की बैठक में बहुत सारी दवाइयां बनाना बताया गया उन्हें बनाये – जैविक चटनी,कंडा पानी एवं जिवाम्रत का उपयोग कर फसलों का बचाव कर सकते है | इनके परिणाम काफी अच्छे है जोकि इस माह देखने को मिले है | इस माह 329 सक्षम समूह की बैठक आयोजित की गई जिसमे 6221 महिलायों ने भाग लिया ओर अपने आस-पास की महिलायों एवं अन्य परिवारों को भी यहाँ जानकारी साझा की गई|

सच्चा स्वराज

ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति की 321 बैठके करवायी आयोजित करवाई गई जिसके परिणाम स्वरुप कुछ मुद्दे जनजातीय स्वराज संगठन में रखे गये | उसके फलस्वरूप सगंठन मुद्धो पर विचार -विमर्श करके निर्णय लिया की विषयावर शिक्षक न होने की वजह से हमारे बच्चे गुणवक्ता पूर्ण शिक्षा से वंचित हो रहे है इस मुददे को लेकर जनजातीय स्वराज संगठन के लोगो ने मिलकर सज्जनगढ एवं कुशलगढ़ ब्लॉक स्तर पर ज्ञापन दिया गया |

जिसका मुख्य केंद्र बिंदु विषयानुसार शिक्षक एवं गुणवक्ता पूर्ण शिक्षा थी |

सच्चा बचपन

दिसम्बर माह में 104 बाल पंचायत की बैठक आयोजीत की गई जिसमे मुख्यरूप से – बाल अधिकार एवं बाल विवाह को लेकर चर्चा की एवं उसके दुष्परिणाम के बारे में बताया गया| साथ ही साथ बच्चो को बताया गया की यदि आप बाल विवाह होते देखे तो इस नंबर -1098 पर कॉल करे बिना डरे |

इस माह और भी गतिविधियाँ हुई जिसमे स्वयं सेवक के चयन प्रक्रिया जोकि ग्राम स्तर पर हुई इन्हें आगे चलकर प्रशिक्षित किया जायेगा और जनकल्याण के लिए कार्य करेगे हमारे साथ जुड़ कर|

इस माह जनजातीय स्वराज संगठनो के अध्यक्ष व सदस्यों के साथ आने वाले बजट को लेकर चर्चा की जाएगी एवं किस प्रकार किस योजना के तहत कार्य में कितना जरूरत है उसके अनुसार विचार- विमर्श होगा |

5 दिसम्बर को विश्व मृदा दिवस बड़े ही उत्साह से 356 गाँवो में मनाया गया जिसमे 16430 लोगो ने अपनी भागीदारी निभाई | सभी जनजातीय स्वराज संगठनों में गाँवो के अनुसार भूमि पूजन, गीत एवं जैव विविधता पर भी ध्यान दिया गया | लगभग हर एक गाँव में 10-12 तरीके के बिज देखने को मिले |

मानगढ़

सच्चा बचपनः ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समितियों के नेतृत्व में 14 से 20 नवम्बर तक बाल अधिकार सप्ताह का आयोजन आनंदपुरी, गागड़तलाई, झालोद और फतेहपुरा के 79 ग्राम पंचायतों में मनाया गया. जिसमे VDCRC के सदस्यों द्वारा विद्यालयों, ग्राम चौपालों और ग्राम पंचायतों में विशेष बैठकों का आयोजन करके बाल अधिकारों तक सभी बच्चों की पहुँच सुनिश्चित करने का कार्य किया गया. विद्यालयों में विविध खेल एवं रचनात्मक गतिविधियों के साथ ही बच्चों की दृष्टि में बाल सुलभ पंचायत बनाने के लिए प्रयास किये. साथ ही vdcrc की बैठकों में बाल सुलभ गाँव बनाने की कार्ययोजना का पुनर्मूल्यांकन कर रणनीति तैयार की गई.

ग्राम विकास एवं बाल अधिकार समिति के द्वारा सभी गाँव के विद्यालयों में खेल मैदान की उपलब्धता, पेयजल की सुविधा के लिए प्रस्ताव शाला प्रबंधन समितियों को दिए गए. गाँव से विद्यालय तक सभी मौसम में आसान पहुँच के लिए सड़क निर्माण के प्रस्ताव भी ग्राम पंचायत को प्रदान किये गए.

सच्ची खेतीः विश्व मृदा दिवस के उपलक्ष्य में मानगढ़ इकाई के सभी गाँवो में संगठन के सदस्यों द्वारा धूमधाम से मृदा दिवस का आयोजन किया गया. जिसमे प्रभात फेरी, मिट्टी की पूजा करते हुए किसानों को मिट्टी संरक्षण और जैविक खेती को अपनाने के लिये प्रेरित किया गया. 76 गांवों की 381 सक्षम समूह की महिलाओं के द्वारा रबी सीजन में गेंहू एवं चने के बीजो को उपचारित करके बोया है. मिट्टी के महत्त्व को समझाते हुए 180 किसानों ने मिट्टी की जाँच कराई है तथा मिट्टी की गुणवत्ता को बढाने के लिए गोबर खाद, जीवामृत आदि का प्रयोग प्रारंभ किया। सक्षम समूह की महिलाओं ने अपने परिवार में विविधतापूर्ण सब्जियों की उपलब्धता बढ़ाने के साथ ही अतिरिक्त मात्रा को बाजार में विक्रय करने का कार्य भी प्रारंभ किया है.

सच्चा स्वराजः ग्रामीण आदिवासियों ने पुरे राजस्थान को दी सामूहिक मदद की सीख...

गमनीया हमीरा, अमरिया पाड़ा, पिठापुरा, कोडीयातलाई, उम्मेदपुरा, पारगी पाड़ा, तारवा, छपरा आदि गाँवो में ग्रामीणों ने आपसी मदद कर मिसाल प्रस्तुत करते हुए निःशुल्क परिश्रम कर फसल कटाई, नहर की सफाई जैसे कार्य पूर्ण कर मानव समुदाय को एकता, प्रेम, निस्वार्थ भाव से परिश्रम करने और सामाजिक सौहार्द का सन्देश दिया है. हमारे समुदाय की इस परंपरा और सामाजिक महत्त्व को समझते हुए राजस्थान पत्रिका ने पुरे राजस्थान में यह खबर प्रमुखता के साथ प्रकाशित की है. जिससे यह सन्देश राजस्थान की एक तिहाई जनता तक पहुंचा है. जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों के नेतृत्व में ग्राम सोडला चमना और खुंटी झाल्मिया में ग्रामीणों ने आपसी चंदा इकठ्ठा कर 50 हजार रुपये जुटाए और सामूहिक श्रमदान कर आपसी सहयोग किया |

अब संगठन के सदस्य ग्राम चौपाल में सुलझाने लगे गाँव के विवाद ...

जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्य ग्राम चौपाल में गाँव के विवाद गाँव में ही सुलझाने लगे है. यह आम ग्रामीणों का जनजातीय स्वराज संगठन के प्रति बढ़ते विश्वास का ही परिणाम है कि ग्रामीण गाँव में होने वाले विवादों को संगठन के पास लेकर आते है और उनके विश्वास को बनाये रखते हुए सर्वमान्य हल संगठन के सदस्यों द्वारा किया जाने लगा है. ऐसा ही उदहारण गाँव जुनी टिम्बी में देखने को मिला जब संगठन के उपाध्यक्ष श्री मोहनलाल जी मकवाना ने दो समुदायों के सदस्यों को ग्राम चौपाल में बैठाकर उनके मतभेद दूर कराये और विवाद को हल किया.

इसी प्रकार जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्य अपने गाँव के विकास के लिए बनाई गई विकास योजनाओ को क्रियान्वित करने के साथ ही संसाधनों को जुटाने के लिए भी प्रयास करने लगे है. हाल ही में विधायक निधि के माध्यम से आनंदपुरी और गांगड़तलाई विकासखंड में विकलांग व्यक्तियों को उपकरण और एकल महिलाओं की आजीविका संवर्धन के लिए सिलाई मशीन दिलवाई गई।

कुंजी छेद बागीचा आपके किचन में रोजाना हरी सब्जियां उपलब्ध कराने का एक अच्छा तरीका है।

सच्चा स्वराज : गांवों के विकास में युवाओं की भूमिका

वर्तमान समय में हम देख रहे है कि सामुदायिक भूमि, जल, जंगल, जमीन , जानवर और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रबंधन नहीं हो पा रहा है । साझे खेत व खेती लगातार घट रहे हैं। इसी कारण गांवों में आपसी झगडे, अपराध और मुकदमे बढ़ रहे हैं। गाँवो के विकास के लिए युवा गांव में रुके; तभी तो वह अपनी असल भूमिका निभा सकेगा। यह तभी संभव है जब समझे कि अधिक पढ़ाई, अच्छे हुनर और अच्छे भविष्य का मतलब सिर्फ पलायन नहीं होता। विकास का असल मतलब है, अपने आसपास के परिवेश को विकसित करने में समर्थ व संकल्पित हो जाना। हमारे युवा साथी कुछ महत्वपूर्ण बातो को ध्यान में रखकर अपने गाँव के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है इसी सन्दर्भ में वाग्धारा संस्था द्वारा 300 से अधिक युवा साथियों के साथ मिलकर स्वयं की आजीविका के साथ ही सम्पूर्ण ग्राम विकास के लिए युवा अपनी शक्ति को सकारात्मक सोच के साथ निरंतर ग्राम विकास में लगा रहे है हम इस अंक में अवगत करवा रहे है की कैसे ज्यादा से ज्यादा युवा साथी अपनी भूमिका ग्राम विकास में विभिन्न घटकों के माध्यम अदा कर सकते है :

संभावनाओं का खुला आकाश

युवाओं को कुशल ग्राम अर्थशास्त्री बनना होगा ताकि गांव को आर्थिक उत्थान के लिए स्थानीय संसाधन आधारित सामुदायिक आधार पर संचालित कृषि, मवेशी, जल,जंगल,

जमीन, जानवर व पारम्परिक उपचार पद्धति, बागवानी, पारंपरिक कौशल उन्नयन आदि ग्राम प्रबंधन सिखाने वाली अच्छी तकनीकी व प्रबंधन पाठशालाओं से रूबरू होकर । बस कुछ युवा साथी एक बार यह तय कर लें, कि कुश्ती, दौड, निशानेबाजी, तैराकी जैसे ग्राम अनुकूल खेलों की नर्सरी बनाकर भी ग्रामीण युवा सफलता हासिल कर सकते हैं।

सोच बदलने से बदलेगी दुनिया (सोच बदलने में

कई युवाओं ने अपने गाँव के विकास में अहम भूमिका अदा की है जैसे : जलपुरुष राजेन्द्र सिंह अलवर (जो वाग्धारा संस्था में भी पधारे है) , हिवरे बाज़ार के पोपटराव पवार की सरपंची की विख्यात कहानी, भारत की पहली एम.बी.ए. डिग्रीधारी महिला सरपंच होने के नाते राजस्थान के ज़िला टोंक की छवि राजावत.... ऐसे जाने कितने उदाहरण हैं, जो बताते हैं कि गांव में रहकर भी बेहतर आय, बेहतर रोज़गार, बेहतर सम्मान और शहर से अधिक आनंदमयी जीवन संभव है। किंतु इसके लिए ग्रामीण

युवा को सबसे पहले अपनी मानसिकता व प्राथमिकता बदलनी होगी। उसे शहर में नौकर बनने की बजाय, गांव में अपने काम का खुद मालिक बनने का सपना देखना होगा। निजी उत्थान को गांव के उत्थान से जोड़ना होगा। । तभी तो सोच बदलने से ही बदलेगी हमारे गाँवो की तकदीर .....।

पंचायत में भूमिका

युवाओं को ग्राम सभा की ऐसी उत्प्रेरक शक्ति बनना पड़ेगा, जो खुद सक्रिय हो और पंचायतीराज

संस्थान की त्रिस्तरीय इकाइयों को सतत् सक्रिय, कर्मठ तथा ईमानदार बनाये रखने में सक्षम हो। 'ग्राम विकास योजना' की धनराशि गांव-गांव पहुंचने लगी है। प्रत्येक ग्रामीण युवा चाहे, तो ग्रामसभा सदस्य की हैसियत से उचित ग्राम विकास योजना निर्माण, मंजूरी तथा क्रियान्वयन में एक नायक की भूमिका निभाकर ग्राम विकास में अहम भूमिका अदा कर सकता है।

पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को पुनः प्रतिष्ठित व प्रसारित करने में भूमिका

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को पुनः प्रतिष्ठित व प्रसारित करने का काम शुरु किया है।

गांवों में आज इसकी बहुत जरूरत है। गांववासियों की गाढ़ी मेहनत कमाई का बहुत बडा हिस्सा पढ़ाई, दवाई, नशाखोरी और मुकदमेबाजी में जा रही है। नशा, ग्राम सशक्तिकरण की राह का बडा रोडा है। अपने बुजुर्गों से स्थानीय वनस्पति व जीवन शैली आधारित परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों के ज्ञान व व्यवहार को पुनः हासिल करना गांव को सशक्त करने का ही काम है। इसके जरिए गांवों में अचूक देसी नुस्खों की पूरी आयुवेर्दिक फार्मेसी खडी करना संभव है। जडी-बूटी कूटते-कूटते फार्मेसी की प्राथमिक पाठशाला का ज्ञान संभव है।

कृषि में भूमिका

युवा साथियों ने भी खेती को निकृष्ट मान लिया है। उन्हें स्वयं से प्रश्न करना होगा कि हमारी खेती और खेतिहर की आज दुर्दशा क्यों है ? उसे मंथन करना होगा कि यदि खेती सचमुच घाटे का सौदा है, तो फिर कई कंपनियां खेती के काम में क्यों उतर रही हैं ? कमी हमारी खेती में है या हम में ? ऊंची पसंद वाले देसी, जैविक को अन्य से

उत्तम समझ रहे हैं। ग्रामीण युवा को समझना व समझाना होगा उसका ' देशी ' आज भी सर्वश्रेष्ठ है। अधिक उत्पादन के लालच में हमने गांवों के खेत व मिट्टी को रासायनिक उर्वरकों व खतरनाक कीटनाशकों की चपेट में ला दिया है। बंजर भूमि के आंकडे बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। भूजल स्तर गिरने, खरपतवारों के बढ़ने, उर्वरक व बाजारू बीज खरीदने की मज़बूरी तथा कृषि में बढ़ते यंत्रों के उपयोग ने खेती की लागत बढ़ाई है। साल-दर-साल संरक्षित किए जा सकने वाले देशी बीज, जैविक खाद, बागवानी मिश्रित खेती, बेहतर मवेशी, बेहतर भू-जल प्रबंधन, सिंचाई व खेती के अनुकूल वैज्ञानिक तरीके व सुविधाओं को अपनाकर गांव के युवा खेती को फिर से लाभ का सौदा बना सकते हैं। मदद के लिए सरकारी योजनाओं जैसेः ग्राम हाट, जलग्राम योजना, ग्राम विकास योजना, हरियाली, कृषि विस्तार योजनायें, सिंचाई योजनायें, भूमि सुधार कार्यक्रम, सांसद आदर्श ग्राम योजना, भू अभिलेखों का डिजीटलीकरण, मनरेगा आदि ... अलग-अलग मंत्रालयों कि ऐसी जाने कितनी योजनायें व कार्यक्रम हैं। युवा साथी इन योजनाओं का लाभ उठाकर गांव की खेती, मिट्टी और पानी की तसवीर बदल सकते हैं।

ग्रामोद्योग में भूमिका

इंटरनेट, अब प्रशासन से सीधे जुड़ने का साधन है। सरकार और बाज़ार अब आंनलाइन है। पढ़े-लिखे ग्रामीण युवा की भूमिका यह है कि वह ऐसी योजनाओं, कार्यक्रमों तथा अनुकूल वैज्ञानिक प्रणालियों के सही चुनाव करने में गांव की मदद करे । जैसे : प्रतापगढ़ का आंवला, बांसवाडा के आम, तेंदू पत्ते...

एक ही जगह निगाह डालिए, तो कितने ही उत्पाद अपने क्षेत्र में ब्रांड की तरह आज भी प्रतिष्ठित हैं। न जाने कितने इलाकाई उत्पाद हैं, जिनकी प्रतिष्ठा आज भी डिगी नहीं है। इन सभी की प्रतिष्ठा की असल वजह आज भी गांव की कारीगरी और स्थान विशेष की मिट्टी, पानी व आबोहवा ही है। इन्हे सशक्त कर, अपनी आय भी बढ़ा सकता है और रोज़गार के मौके भी। कौशल विकास, खादी-ग्रामोद्योग आयोग, सहकारी तंत्र,लघु उद्योगों को 10 लाख के ऋण हेतु प्रधानमंत्री मुद्रा योजना समेत कई योजनायें ग्रामोद्योग आधारित सशक्तिकरण में मदद कर रही हैं। कृषि व ग्रामोद्योग आधारित सशक्तिकरण, यह पलायन रोकने की चाबी भी है और आय व आत्मसम्मान हासिल करने का खुला आसमान भी।

गाँव की स्वच्छता में भूमिका

गांवों ने शहरी खान-पान, रहन-सहन व प्लास्टिक पैक उत्पाद तो अपना लिए, लेकिन शहर जैसा स्वच्छता तंत्र गांव के पास नहीं है; लिहाजा गांव अब गंदगी और बीमारी के नये अड्डे बनने की दिशा में अग्रसर हैं। काली-पीली पन्नियां, बजबजाती नालियां और अन्य गंदगी के ढेर नई पहचान बनते जा रहे हैं।

इन निशानों को मिटाना भी गांव का सशक्तिकरण ही है। ग्रामीण युवा इसका संकल्प कर ले और वह खुद ही इस आवश्यक बदलाव का वाहक व नायक बन सकता है; क्योंकि युवा होता ही वही है, जो लीक से अलग चले और दुनिया बदले।

उक्त लेख के आधार पर किसी ने क्या खूब लिखा है : -

गाँव को गाँव ही रहने दो साहब ,क्यों शहर बनाने में तुले हुवे हो .....

गाँव में रहोंगे तो माता –पिता के नाम से जाने जाओंगे, और शहर में रहोंगे तो मकान नम्बर से पहचाने जाओगे !!

इसलिए वर्तमान समय में हमारे युवाओं को अपनी भूमिका ग्राम विकास के विभिन्न घटकों के रूप में देखते हुए सकारात्मक सोच के साथ कुछ अलग करने की कोशिश करनी चाहिए ...

सफलता की कहानी

किसान की मेहनत रंग लाई : आज हम बात कर रहे है ऐसे उन्नत किसान की जिन्हें हाल ही में दिनांक 12 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2022 तक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में आयोजित जलवायु स्मार्ट आजीविका एवं पोषण के लिए फसल गहनता प्रणाली पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन – 2022 (ICSCI - 2022) के दौरान सर्वश्रेष्ट किसान पुरुस्कार से नवाजा गया | उन्होंने इस पुरूस्कार का श्रेय वाग्धारा संस्था तथा संस्था सचिव जयेश जोशी जी को दिया, जिनका नाम है श्री मानसिंह निनामा | श्री मानसिंह ने बताया कि संस्था द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन कि अनुपालना करने से ही यह फल मिला है, किसी भी अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन के दौरान सम्मान मिलाना बहुत गर्व कि बात है तथा एक स्वप्न प्रतीत हो रहा है | तो आगे जानते है श्री मानसिंह निनामा कि कहानी, श्री मानसिंह कि जुबानी |

मेरा परिचय :- नाम – मानसिंह निनामा, पिता का नाम रामजी निनामा, गाँव व ग्राम पंचायत सुन्द्राव, पंचायत समिति आनंदपुरी, जिला बाँसवाड़ा (राज.) का रहने वाला हूँ | मैंने खेती कि शुरुआत अपने पिताजी के साथ की व सीखी, पिताजी ने मुझे परम्परागत खेती जो उन्होंने अपने बड़ो से सीखी वह मुझे सिखाया, क्योंकि पिताजी खेती करते थे अतः मुझे भी करनी ही थी | मैं 11 वर्ष पूर्व वाग्धारा संस्था से एक वाड़ी किसान के रूप में जुड़ा,जुड़ने के बाद मुझे कृषि सम्बंधित प्रशिक्षण प्राप्त हुए, संस्था द्वारा कृषि जानकारी विशेषज्ञ द्वारा मेरे खेत पर जानकारी एवं परामर्श प्राप्त हुआ, साथ ही समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा | सबसे महत्वपूर्ण मैंने यह सिखा कि खेती सिर्फ व्यापार या बाजार के लिए ही नहीं वरन मेरे एवं परिवार के पोषण का साधन है , और मैंने समन्वित खेती पद्दति को अपनाया | जिसमे मैंने फलदार पौधे आम , अमरूद , निम्बू, कटहल , सहतुत, जामुन, सीताफल , अनार , पपीता आदि पौधे लगाये साथ में चारा, जलावन,इमारती लकड़ी,फल, फुल, नत्रजन फ़िक्सिंग, मिट्टी कटाव रोकने हेतु पडत जमीन तथा खेत की मेड पर वानिकी प्रजाति के पौधे लगाकर स्वयं का जंगल तैयार किया | कृषि वानिकी के साथ- साथ अंतर फसल, मिश्रित खेती, हांगडी खेती, जैविक कृषि पद्दति, फसल चक्र को अपनाया | मैंने समेकित खेती करते करते संस्था के मार्गदर्शन से कई नवाचार किये है |

- एक बीघा में चावल की खेती मैंने 25 दिन की नर्सरी तैयार कर, SRI विधि से 10 इंच – 10 इंच पौधे से पौधे कि दुरी एवं 10 इंच – 10 इंच लाईन से लाईन कि दुरी पर लगाया | कम्पोस्ट खाद दिया , सिचाई के साथ जिवाअमृत दिया, विडर चला कर खरपतवार निकाली, जिससे एक पौधे में 15 से 20 फुटाव हुआ तथा उत्पादन में दुगुनी बढ़ोतरी हुई |
- गेहूँ में भी SCI पद्दति का उपयोग किया, इससे फसल में गुड़ाई , खरपतवार हटाना आसन हो जाता है , साथ ही सिचाई के लिए कम पानी कि आवश्यकता होती है , बीज कम लगता है, लेबर कम लगाती है, उर्वरक का खर्च कम होता है, उत्पादन में बढ़ोतरी होती है |
- जैविक खेती पद्दति को अपनाया जैसे जीवाअमृत, वर्मी खाद,दसपर्णी, नीम दवा, ब्रह्मास्त्र, प्याज – लहसुन – मिर्ची की दवा, बीजोंपचार आदि अपनाकर फसल का लागत खर्च कम किया |
- हमारे विलुप्त हो गए छोटे अनाज जैसे माल – बावटा, कुरी ,बटी , कांग, कोदरा , चिना को पुनः अपनी फसल का हिस्सा बनाया | माल बावटा में SCI विधि का प्रयोग कर तिन गुना उत्पादन लिया |
- पशुपालन में गाय – भेस- बकरी के साथ - साथ सिरोही नस्ल बकरी एवं एक सिरोही नस्ल का बकरा शामिल किया | उन्नत पशुप्रबंधन कर बकरी में नस्ल सुधार कर सिरोही नस्ल की बकरी बढाई |
- जमीन सुधार हेतु खेतों में मेडबंदी एवं उबड़- खाबड़ जमीन को समतलीकरण किया | मेडबंदी पर पेड़ लगाये | खेती अच्छी होने लगी , पैदावार बढ़ी , खाद्य विविधता बढ़ी |
- हल्दी से हल्दी पाउडर बनाना, दलहन से दाल बनाना शुरू किया | साथ ही घर कि अधिकतम जरुरत की सामग्री खेतों से प्राप्त होने लगी |
- बीज घर का उपयोग करना शुरू किया, बीज में दाल,सब्जी, मसाले, अनाज जैसे मक्का, चावल, कुरी, माल, कांग ,चना, जौ, मटर, चवला आदि सब बीज को सहेजा, उपयोग में लिया व एक दुसरे के साथ बाटा | गर्मी में मुंग कि फसल उगाने लगा हूँ |

मैंने समेकित खेती को मजबूती के साथ सिख कर लागु किया | समुदाय के अन्य लोगो, संगठन के साथ नवाचार को बताया एवं समेकित खेती तंत्र को आगे फ़ैलाने हेतु प्रयास किये | आज मेरे बच्चे जो की उच्च शिक्षा ले रहे है उन्हें भी जब समय मिलता है खेती कि तकनिकी के बारे में बात करता हूँ | मै आज खाद्यान, बीज , दाल, सब्जी, पशु के लिए चारा आदि पर आत्मनिर्भर हूँ | साथ ही घर में उपयोग के बाद बची हुई फसल को बेच कर सालाना जैसे खरीफ़, रबी , जायद फसल से , बकरी पालन से,एवं फलदार पौधे से प्राप्त फल से दो लाख से ज्यादा आमदनी लेता हूँ | समाज में जब भी बैठक में जाता हूँ तो लोग मेरी दी गई राय को ध्यान से सुनते है तथा प्राथमिकता देते है | मै एक किसान के रूप में अपने आप को एक संपन्न आदमी मनाता हूँ |

वागड़ रेडियो 90.8 FM
वाग्धारा, कुपड़ा
SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वाग्धारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

..... । मार्गदर्शक : दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार । मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार । संकलक सहयोगकर्ता : जागृती भट्ट । .....